Meaning of Culture

Culture is the expression of our nature in our mode of thinking and living in our everyday intercourses. It is a key concept in both sociology and anthropology. It is culture which shapes our values beliefs, nome, and to a gros exert our attitudes and the way we perceive the world around us. The way we des speak, greet one another, and the structures and institutions we build are determined by our culture Culture refers to a groups social heritage that has been treated from genention to generation Scientific knowledge, philosophical systems, literary mors, at forms, and customs and mers are haled down from one generation to the other Culture also includes religious, political, economic and other types of activities. Cuture encompasses not only material objects such as tools, technology fashion jewelry and buildings. It includes all the means of hunn survival which includes man's invertions and inventories as well as the means by which man adjusts to his environment. Culture includes all that in his acquired in his individual and social life. In the works of Macher and Page, culture is "the realms of styles of values of emotional attachments of intellectual adventures.

Definitions

1. TS Elliot is of the view that the term culture "includes all the characteristic activities and interests of people .
2. E. B. Taylor, an English anthropologist, has defined culture as "that complex whole which includes knowledge, beliefs, art, momis, law custom and any other capabilities and habits acquired by man as a member of society.

   Characteristics of Culture

   1. Culture is learnt
   2. Culture is social
   3. Culture is transmissive
   4. Culture is dynamic and adaptiv
   5. Culture is continuous and cumulative

Interrelationship between Education and Culture

Meaning and concept of culture testifies to the fact that education and culture are integrally and intimately connected. Both culture
and education goes hand in hand with one another. Culture has profound implications for education. The social living is influenced
by education and education is itself governed by social life.Without culture there can be no growth and progress of man. According
to Wodkowksi (1995), "teacher must relate teaching content to the cultural background of their students, if they want to be effective in
multicultural classroom." The culture of a society has its inevitable impact on its
educational system. The educational system points to the various needs of the society concerned, because it is towards the fulfillment of the same that education is organized. If the culture of a society is
chiefly materialistic, the education system there is based on competition and the efforts of the individual there is directed towards the achievement of material goals, and nor towards spiritual or aesthetic ones. If individualism is at the top in a culture the educational system of the society, too, becomes colored by individualism. Whatever we learn through education is immensely influenced by culture. Now we will study the interrelationship between the two here.

Influence of Education on Culture

1. Conservation/Preservation of culture
2. Transmission of culture
3. Promotion of culture
4. Cultural reforms

शिक्षा और संस्कृति की अवधारणा

संस्कृति और शिक्षा एक-दूसरे के पर्याय हैं। संस्कृति का काम है- संस्करण अर्थात् परिष्कार करना। यही काम शिक्षा भी करती है। समाज की रचना में भी संस्कृति का विशेष योग रहता है। किसी भी सामाजिक संरचना को समझने के लिए संस्कृति एक आवश्यक तत्व है। संस्कृति समाज को संगठित रखती है। जीवन शैली के स्वरूप को प्रस्तुत करने का कार्य संस्कृति करती है। संस्कृति शब्द की व्युत्पत्ति सम् उपसर्ग कृ-धातु स्तिन प्रत्यय से हुई है। इसमें जीवन के सभी पक्षों का समन्वय है। राल्फ लिंटन के अनुसार- "संस्कृति सीखे हुए व्यवहारों तथा उनके परिणामों का वह समग्र रूप है, जिसके निर्माणकारी तत्व किसी विशिष्ट समाज के सदस्यों द्वारा प्रयुक्त और संचरित होते हैं। "

संस्कृति का सम्पूर्ण जीवन शैली से सम्बन्ध होता है। सभ्यता संस्कृति का भौतिक पक्ष है। भौतिक तथा अभौतिक है संस्कृति को क्रमशः सभ्यता तथा संस्कृति कहा जाता है।

. संस्कृति की परिभाषा

ओटावे **(Ottaway) –** किसी समाज की संस्कृति से अर्थ उस समाज की सम्पूर्ण जीवन पद्धति से होता है। The culture of society means the total way of life of a society.

संस्कृति और शिक्षा

1. सांस्कृतिक निर्धारक-
2. देश, काल, समाज की शिक्षा-
3. व्यक्तित्व का विकास

संस्कृति का शिक्षा पर प्रभाव

संस्कृति का शिक्षा पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति को विकसित करने में संस्कृति का विशेष हाथ रहता है। आलपोर्ट के अनुसार-"व्यक्तित्व व्यक्ति के अन्दर वह गतिशील और मन शारीरिक प्रणालियों का संगठन है, जो पर्यावरण, के प्रति उसके समंजन का स्वरूप निर्धारित करता है।" संस्कृति इसमें योग देती है। संस्कृति का शिक्षा पर प्रभाव इस प्रकार पड़ता है-

1. संस्कृति मनुष्य को अपने प्राकृतिक पर्यावरण में समायोजन करने योग्य बनाती है।
1. संस्कृति मनुष्य को अपने सामाजिक परिवेश में समायोजन करने योग्य बनाती है।
2. संस्कृति मनुष्य को समायोजन के योग्य बनाती है।
3. संस्कृति व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करती है।

संस्कृति की प्रकृति एवं विशेषताएं

यद्यपि सैद्धांतिक रूप में संस्कृति के संप्रत्यय के संबंध में सभी विद्वान एकमत नहीं है परंतु उसके व्यावहारिक पक्ष के संबंध में सब एकमत हैं यहां हम उसी को उसकी प्रकृति एवं विशेषताओं के रूप में प्रस्तुत करेंगे-

- संस्कृति मानव की विशेषता है
- संस्कृति मानव समाज के युग-युग की साधना का परिणाम है
- संस्कृति, सांस्कृतिक तत्वों का एक विशेष संगठन है.
- भिन्न-भिन्न समाजों की भिन्न-भिन्न संस्कृतियाँ होती हैं.
- संस्कृति समाज विशेष के लिए आदर्श होती है.
- संस्कृति समाज के व्यक्तियों को एक सूत्र में बांधती है.
- संस्कृति मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण करती है.
- संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होती है.
- संस्कृति परिवर्तन एवं विकासशील होती है.
- संस्कृति के प्रति प्रतिमान शिक्षात्मक होते हैं.
- संस्कृति में सामाजिक गुण निहित होता हैं

शिक्षा एवं संस्कृति

शिक्षा और संस्कृति परस्पर घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं. इस संबंध में ब्रामेल्ड (Brameld) कहते हैं, "संस्कृति की सामग्री से ही शिक्षा का प्रत्यक्ष रूप से निर्माण होता है और यही सामग्री शिक्षा को न केवल उसके स्वयं के उपकरण वरन उसके अस्तित्व का कारण भी प्रदान करती है."
शिक्षा अपने रूप-रेखा का निर्माण समाज की संस्कृति के अनुसार ही करती है और संस्कृति का निर्माण समाज के उपकरणों, विचार और मूल्यों के आधार पर ही होता है. यदि किसी समाज की संस्कृति में आध्यात्मिकता का प्रमुख स्थान है तो वहां की शिक्षा व्यवस्था में नैतिकता चारित्रिक और आध्यात्मिक मूल्यों पर विशेष बल दिया जाता है. इसके साथ-साथ किसी समाज की संस्कृति का संरक्षण समाज के माध्यम से ही होता है. इस प्रकार संस्कृति शिक्षा को और शिक्षा संस्कृति को प्रभावित करते हैं-
संस्कृति का शिक्षा पर प्रभाव
1.शिक्षा के उद्देश्यों पर संस्कृति का प्रभाव-
2. शिक्षा के पाठ्यक्रम पर संस्कृति का प्रभाव
3. शिक्षण विधियों पर संस्कृति का प्रभाव
4.अनुशासन पर संस्कृति का प्रभाव-
5.विद्यालय पर संस्कृति का प्रभाव
6.शिक्षा पर संस्कृति के रूप में प्रभाव-

लोकतंत्र के लिए शिक्षा

जनतन्त्र (लोकतंत्र)
लोकतंत्र, प्रजातंत्र अथवा जनतंत्र शब्द के लिए अंग्रेजी भाषा में Democracy शब्द का प्रयोग जोता है जो दो ग्रीक शब्दों Demos (डेमोस) तथा Cratic (कॅटिक) का योग है। डेमोस का अर्थ है शक्ति और क्रेटिक का अर्थ है जनता। इस प्रकार डेमोकैसी का शाब्दिक अर्थ है जनता की शक्ति अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने जनतंत्र को परिभाषित करते हुए लिखा है-'जनतन्त्र जनता का जनता द्वारा जनता के लिए शासन है।
लोकतंत्र के मूल सिद्धान्त
मुख्य सिद्धान्त
1. स्वतन्त्रता (Freedom)
2. समानता (Equality)
3. बन्धुता (Fraternity)
4. न्याय (Justice)

जनतंत्र के लिए शिक्षा की आवश्यकता
शिक्षा के क्षेत्र में जनतन्त्र के मूल्यों व सिद्धान्तों को प्रयोग किए जाने का श्रेय जॉन डीवी को जाता है। उनके अनुसार, एक जनतंत्रीय समाज में ऐसी शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए जिससे प्रत्येक व्यक्ति सामाजिक कार्यों और सम्बंधों में निजी रूप से रूचि ले सके। शिक्षा के द्वारा मनुष्य में प्रत्येक सामाजिक परिवर्तन को दृढ़तापूर्वक स्वीकार करने की सामर्थ्य के द्वारा उत्पन्न करनी चाहिए।

शिक्षा में जनतंत्र
- शिक्षण पद्धतियाँ
- स्कूल प्रशासन
- सार्वभौमिक व अनिवार्य शिक्षा
- समान अवसर प्रदान करना और व्यक्तिगत विभिन्नता का आदर करना
- शिक्षा के समस्त साधनों में सहयोग
- प्रौढ़ शिक्षा की व्यवस्था

वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली

देश की आधुनिक शिक्षा प्रणाली को समझने के लिए तथा उसका स्पष्टीकरण के लिए वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है; कि जिस शिक्षा प्रणाली को आज हम स्वीकार कर रहे हैं। और जिसमें निरन्तर परिवर्तन कर रहे हैं। आखिर उसकी नींव कैसी है? और इस शिक्षा का स्वरूप कैसा था ? क्योंकि वर्तमान समय में हम

खुद को विषम परिस्थिति में पाते हैं। हम साएक ओर प्राचीन संस्कृति को बचाने का प्रयास कर रहे हैं। तो दूसरी ओर इसके पुनरूत्थान की बात करते हैं। ऐसे समय में हमें ऐसी शिक्षा प्रणली का चयन करना होगा, जिसमें दोनों विचारधाराओं में सामंजस्य स्थापित हो सके। अर्थात् ऐसी शिक्षा प्रणाली जिसकी आत्मा भारतीय हो, लेकिन दृष्टिकोण प्रगतिशील तथा वैज्ञानिक हो।
एक अंग्रेज विद्वान थॉमस ने लिखा है कि "ऐसा कोई देश नहीं है जहाँ ज्ञान के प्रति प्रेम इतने प्राचीन समय में हुआ हो जितना भारत में या जिसने इतना स्याई और शक्तिशाली प्रभाव उत्पन्न किया हो जितना भारत ने।"
वैधिक शिक्षा का प्रशासन एवं वित्त
1. राज्य के नियंत्रण से मुक्त वैदिक कालीन शिक्षा में राज्य का कोई हस्तक्षेप नहीं था। और न ही उस पर कोई नियंत्रण था, अर्थात् गुरूकुल 'गुरू' के अनुसार ही चलता था। और उस पर नियंत्रण भी 'गुरू' का ही था।
2. आय के स्त्रोत :- वैदिक काल में शिक्षा के लिए राज्य द्वारा न तो कोई अनुदान दिया जाता था और न ही किसी प्रकार का शुल्क लिया जाता था। इस काल में समाज के धनी वर्ग, राजा महाराजा गुरूकुल को पशु, भूमि, अन्न, वस्त्र, बर्तन व मुद्राएँ दान करते थे। तथा नित्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए छात्र भिक्षा माँगकर लाते थे। गुरूदक्षिणा भी आय का एक स्त्रोत थी। जब बालक की शिक्षा पूरी हो जाती थी तो गुरू बालक की सामर्थ्य के अनुसार गुरू दक्षिणा लेता था। छात्र गुरूदक्षिणा में भूमि, पशु, अन्न वस्त्र, मुद्राएँ आदि भेंट करते थे।
वैदिक कालीन शिक्षा के उद्देश्य
वैदिक कालीन शिक्षा के उद्देश्य के सम्बन्ध में उपनिषद् में मिलता है कि "सा विद्या या विमुक्तये" अर्थात् विद्या यह है जो मुक्ति दिलाये। और यह मुक्ति आध्यात्म के द्वारा प्राप्त की जा सकती है। वैदिक शिक्षा का अध्ययन के उपरान्त यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा का उद्देश्य था कि प्रत्येक विद्यार्थी इन आध्यात्मिक प्रश्नों की स्वयं से पूछे और इनका उत्तर खोजने का प्रयास करे कि
वैदिक कालीन शिक्षा के उद्देश्यों को क्रमबद्ध रूप से इस प्रकार लिख सकते हैं।

1. आध्यात्मिक विकास करना।

2. व्यक्तित्व का विकास करना।

3. नैतिक एवं चारित्रिक विकास करना।

4. ज्ञान का विकास करना।

5. व्यावसायिक कुशलता में वृद्धि करना।

6. संस्कृति का संरक्षण एवं हस्तांतरण करना।

7. शुद्धता एवं पवित्रता ।

8. सामाजिक भावना का विकास करना।
वैदिक कालीन शिक्षण विधियाँ

- कण्ठस्थ, आवृत्ति विधि :
- प्रश्नोत्तर, वाद विवाद :
- श्रवण, मनन विधि
- स्वाध्याय विधि
- तर्क विधि :
- प्रदर्शन एवं अभ्यास विधि :

वैदिक काल में जन शिक्षा
वैदिक काल में जन शिक्षा का विकास नहीं हो पाया। अर्थात शिक्षा सभी के लिए समान नहीं दी। द शिक्षित परिवार के बच्चे ही शिक्षा ग्रहण करते थे। बालिकाओं को शिक्षा नहीं दी जाती थी। इनका गुरुकुल में प्रवेश वर्जित था। यूँ तो

वाजसनेही संहिता में चारों वर्णों के बच्चों को शिक्षा के अधिकार का उल्लेख मिलता है। लेकिन उत्तर वैदिक काल में वर्णानुसार कर्म की शिक्षा दी जाती थी। शूद्रों को शिक्षा के अधिकार से वंचित कर दिया गया।

वैदिक काल में स्त्री शिक्षा

प्रारम्भिक वैदिक काल में स्त्रियों को किसी भी प्रकार की शिक्षा नहीं दी जाती थी। लेकिन उत्तर वैदिक काल में उन्हें वर्णानुसार शिक्षा देने का उल्लेख मिलता है। डा० अल्तेकर ने एक तथ्य उजागर किया कि वैदिक काल के अन्तिम चरण में बालिकाओं के विवाह की आयु 12 वर्ष निश्चित कर दी गई थी और उनके लिए वेदों का अध्ययन निषेध कर दिया गया था। बालिकाओं के लिए अलग गुरुकुल व्यवस्था नहीं थी। यूँ तो वैदिक काल में अपाला, घोषा, गार्गी, होमशा, शाश्वती आदि विदुषी महिलाओं का नाम भी मिलता है। ये गुरूओं की पुत्रियाँ व अधिक धनी व विशिष्ट व्यक्तियों की कन्याएँ थी। जिन्हें घर में ही शिक्षित किया जाता था। वास्तविकता यह है कि वैदिक काल में स्त्री शिक्षा की स्थिति ठीक नहीं थी।

वैदिक काल में व्यावसायिक शिक्षा

इस काल में गुरूकुलों में छात्रों को सामान्य ज्ञान के साथ-साथ उनकी योग्यतानुसार कर्म की भी शिक्षा दी जाती थी। उत्तर वैदिक काल में वर्ण के अनुसार व्यवसाय की शिक्षा दी जाती थी। ब्राह्मण के लिए पठन, पाठन, कर्मकाण्ड, यज्ञ आदि की शिक्षा, क्षत्रिय के लिए राजनीति, युद्ध कौशल, वैश्य के लिए कृषि, पशुपालन, मूल्य, अनुमान, वाणिज्य आदि की शिक्षा दी जाती थी। शूद्रों को शिक्षा का अधिकार नहीं था। वे घर में ही संगीत, नृत्य, वास्तुकला, शिल्पकला के कार्य करते थे। गौतम धर्मसूत्र में इन शिल्पियों का वर्णन मिलता है। इसमें भवन निर्माण, पाषाण कला, काण्ठ कला आदि शामिल हैं

वैदिक कालीन शिक्षा केन्द्र

- तक्षशिला
- मिथिला
- केकय
- प्रयाग
- काशी

वैदिक शिक्षा प्रणाली का मूल्यांकन

इसमें कोई दो मत नहीं है कि जब संसार की अन्य मानव जातियाँ अज्ञान के अंधेरे में जीवन जी रही वी। तब हमारे देश में ज्ञान का सूरज चमक चुका था। आज हम जो सभ्य तथा सुसंस्कृत जीवन जी रहे हैं, यह सब वैदिक शिक्षा प्रणाली का ही परिणाम है। आज भी जब हम शिक्षा में मूल्यों व नैतिकता की बात करते हैं तो वैदिक काल की चर्चा अवश्य करते हैं। वैदिक शिक्षा प्रणाली आज भी उतनी ही उपयोगी है जितनी कि पहले। इसे हम प्राचीन के प्रति मोह ही कहेंगे। भारत की शिक्षा प्रणाली का विश्व के अन्य देश भी अनुशरण करते हैं। इग्लैण्ड में जब शिक्षा के विकास का प्रथम चरण प्रारम्भ हुआ, व्हॉ शिक्षकों की कमी थी। इस कमी को पूरा करने के लिए बड़ी कक्षाओं के छात्रों को छोटी कक्षाएँ पढ़ाने का कार्य दिया जाता था। यह प्रणाली भारतीय वैदिक शिक्षा प्रणाली में पहले से ही प्रचलित थी। यहाँ वर्तमान भारत के सन्दर्भ में वैदिक शिक्षा प्रणाली के गुण, दोषों का विवेचन किया जा रहा है।

वैदिक शिक्षा प्रणाली के गुण

1. वैदिक कालीन शिक्षा का उद्देश्य धार्मिक, आध्यात्मिक, नैतिक विकास करना था। वह जीवन के लौकिक व पारलौकिक दोनों पहलुओं से सम्बन्धित थी।
2. शिक्षा का दृष्टिकोण व्यापक था तथा मोक्ष प्राप्ति करना मुख्य लक्ष्य था।
3. गुरु का स्थान उच्च था। छात्र गुरू का आदर व सम्मान करते थे तथा श्रद्धा भक्ति व सेवा रखते
4. इस काल में शिक्षा निःशुल्क दी जाती थी।
5. इसमें अच्छी शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता था तथा शिक्षण को रोचक व प्रभावी पर विशेष बल दिया जाता था

गुरुकुलों का वातावरण शांत था तथा इनमें संस्कार युक्त जीवन पद्धतिथी तथा अनुशासित व संयमित जीवन व्यतीत करते थे।

7. वैदिक वाल में गुरू एवं शिष्य दोनों ही अनुशासित जीवन व्यतीत करते थे।

वैदिक शिक्षा प्रणाली के दोष

1. वैदिक तीन शिक्षा पर राज्य का कोई नियंत्रण नहीं था। इस पर केवल गुरुओं काही कार था। इस कारण से शिक्षा का सर्वमान्य स्वरूप विकसित नहीं हो पाया।

कति के कारण शों को शिक्षा के अधिकार से वंचित रखा गया। जिसरी धार्मिक र बौदिक कार्यों में सफलता मिली। व्यावसायिक व कला क्षेत्र का विकास नहीं हो

3. दैदिक शिक्षा में कर्मकाण्डों की प्रधानता बहने लगी। छात्रों का अधिकांश समय कर्मकाण्ड में है अपस्तीत होने लगा, बाद में ये कर्मकाण्ड जनता के लिए अर्थहीन हो गया।
4. गुरुकुलों में आय के अनिश्चित साधन थे छात्र भिक्षावृत्ति करते थे। राज्य से शिक्षा के लिए कोई सहायता नहीं दी जाती थी। भिक्षावृत्ति एवं दान से गुरूकुल व्यवस्था चलाना कठिन कार्य है।
5. वैदिक काल में स्त्री शिक्षा की स्थिति दयनीय थी स्त्री शिक्षा पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया गया।
6. शिक्षा का माध्यम संस्कृत होने के कारण जन साधारण की शिक्षा की पूर्ण उपेक्षा की गई।
प्राचीन शिक्षा जन साधारण की शिक्षा का विकास न कर सकी।
7. शिक्षा व्यवस्था पूर्णतः मौखिक थी लेखन कार्य नहीं कराया जाता था।
8. जाति-पाति के भेद-भाव के कारण निम्न जाति को हेय दृष्टि से देखा जाता था।
9. अहिंसा व शान्ति को प्रमुख स्थान देने के कारण अस्त्र निर्माण व युद्ध कौशल की शिक्षा नहीं दी जाती थी।
परिणामस्वरूप राष्ट्र कमजोर पड़ गया। वह विदेशी आक्रमणकारियों का मुकाबला करने में असफल रहा

बौद्धकालीन शिक्षा प्रणाली

परिवर्तन शास्वत है, जब कोई विचारधारा एक सीमा को पार कर जाती है। तो दूसरी विरोधी विचारधारा का जन्म होता है। भारतीय शिक्षा प्रणाली में भी ऐसा ही हुआ। जब उत्तर वैदिक काल में कर्मकाण्ड अधिक तथा कठौर वर्ण व्यवस्था का रूप समाज में फैल चुका था। तब 563 ई० पूर्व महात्मों बुद्ध का जन्म हुआ। यूं तो महात्मा बुद्ध राजघराने में पैदा हुऐ थे। उन्हें सारी सुख सुविधाएँ उपलब्ध थी। लेकिन उन्होंने सांसारिक दुःखों का अनुभव किया, और इन दुखों से मुक्ति पाने के लिए तपस्या की। तथा कर्मकाण्ड प्रधान वैदिक धर्म के स्थान पर करूणा प्रधान मानवतावादी बौद्ध धर्म की स्थापना की। बौद्ध धर्म का प्रभाव 500 ई० पूर्व से 1200 ई० तक रहा। इसे बौद्ध काल कहा जाता है।

बौद्ध शिक्षा का अर्थ

बौद्ध शिक्षा प्रणाली में शिक्षा का अर्थ केवल मठ एवं विहारों में चलने वाली शिक्षा से है। इस काल मे शिक्षा को ज्ञान का पर्याय न मानकर ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया को माना गया है। तथा शिक्षा के निर्वाण प्राप्ति का साधन माना जाने लगा।

बौद्ध कालीन शिक्षा संरचना

बौद्ध कालीन शिक्षा के सन्दर्भ में एल. के. मुखर्जी ने अपने विचार इस प्रकार प्रस्तुत किये - "बौद मठ, बौद्ध शिक्षा और ज्ञान के केन्द्र थे। बौद्ध संसार अपने मठों से पृथक या स्वतंत्र रूप से शिका प्राप्त करने का कोई अवसर नहीं देता था। धार्मिक और अलौकिक सब प्रकार की शिक्षा भिक्षुओं के हाथ में थी।" बौद्ध कालीन शिक्षा संरचना इस प्रकार थी।

1. प्राथमिक शिक्षा
2. उच्च शिक्षा
3. भिक्षु शिक्षा

बौद्ध कालीन शिक्षा के उद्देश्य

2. व्यक्तित्व का विकास करना।

3. संस्कृति का संरक्षण एवं विकास।

4. भावी जीवन के लिए तैयार करना।

5. नैतिक गुणों का विकास करना।

6. चरित्र निर्माण करना।

7. बौद्ध धर्म की शिक्षा।

8. सामाजिक विकास करना।

9. सम्बोधि का विकास करना।

बौद्ध शिक्षा की पाठ्यचर्या

- प्राथमिक स्तर की पाठ्यचर्या
- उच्च स्तर की पाठ्यचर्या
- विशिष्ट शिक्षा के अन्तर्गत
- धार्मिक शिक्षा के अन्तर्गत
- भिक्ष शिक्षा की पाठ्यचर्या

बौद्ध कालीन शिक्षण विधियाँ

- प्रवचन विधि :
- व्याख्यान विधि
- सम्मेलन व शास्त्रार्थ
- निदिध्यासन विधि :
- देशाटन या भ्रमण विधि
- वाद विवाद या तर्क विधि
- सम्यक् समाधि विधि
- स्वाध्याय विधि :

बौद्ध काल में गुरू शिष्य सम्बन्ध

1. शिष्यों के रहने व भोजन आदि की व्यवस्था करना।

2. शिष्यों के आचरण पर दृष्टि रखना।

3. शिष्यों का चरित्र निर्माण करना।

4. शिष्यों को उनकी योग्यतानुसार विशिष्ट ज्ञान देना।

5. शिष्यों के स्वास्थ्य की देखभाल करना।

6. शिष्यों को बौद्ध धर्म का ज्ञान कराना।

7. शिष्यों का शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक विकास करना।

बौद्ध धर्म की उन्नति के कारण

- बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों की सरलता
- यज्ञों और पुरोहितों का कुप्रभाव
- जाति प्रथा का विरोध व समानता की भावना
- लोकभाषा का प्रयोग
- बुद्ध का आकर्षक व्यक्तित्व
- रोचक प्रचार शैली
- राजाओं का आश्रय

बौद्ध शिक्षा प्रणाली के दोष

1. इस काल में आय के अनिश्चित स्त्रोत थे, केवल भिक्षावृत्ति बच्चों से कराई जाती थी।
2. इस काल में भी बालोचित शिक्षण विधियों का प्रयोग नहीं किया जाता था।
3. बच्चों को कठोर अनुशासन में रहना पड़ता था।
4. मठों एवं विहारों की कठोर जीवन पद्धति थी।
5. स्त्री शिक्षा का ह्रयस इस काल में हुआ।
6. सैनिक शिक्षा पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया गया।
7. धार्मिक व नैतिक शिक्षा के नाम पर केवल बौद्ध धर्म की शिक्षा ही दी जाती थी।

बौद्ध शिक्षा प्रणाली के गुण

1. बौद्ध शिक्षा संस्थाओं पर संघ व राज्य का नियंत्रण था।
2. सभी स्तरों में सभी प्रकार की शिक्षा का प्रबन्ध था।
3. इस काल में शिक्षा के समान अवसर थे।
4. शिक्षा के उद्देश्य व्यापक थे।
5. शिक्षा की पाठ्यचर्या विस्तृत थी तथा उच्च स्तर के छात्रों को विशिष्ट सुविधा प्राप्त थी।
6. शिक्षा का माध्यम लोकभाषा थी।
7. कला कौशल व व्यावसायिक शिक्षा का उचित प्रबन्ध था।
8. मानवतावादी शिक्षा पर बल।

मुस्लिम शिक्षा प्रणाली
प्राचीन काल से भारत विदेशी शासकों के आकर्षण का केन्द्र था। इनका मुख्य कारण में अपार सम्पति का होना था। भारत की अपार सम्पत्ति से आकर्षित होकर मुसलमानों ने आ महाब्दी में आक्रमण करने प्रारम्भ कर दिए। लेकिन मुस्लिमों के आक्रमणों का तूफान महमूद गज के समय से आरम्भ हुआ। जिसने प्रथम आक्रमण 1000 ई0 में किया तथा 1026 ई० तक भारत के 17 बार आक्रमण किए। उसका उद्देश्य भारत से धन लूटकर गजनी को वैभवशाली बनाना था। क्योंकि उस काल में भारत के मन्दिरों में अपार धन सम्पत्ति का खजाना था। धीरे-धीरे मुस्लिम शासकों के भारत में आक्रमण शुरू हो गये तथा भारत में शासन करने लगे। इतिहासकारों ने अनुसार 1200 0 से 1700 ई0 तक मुस्लिम शासन का वर्चस्व रहा इस काल को मुस्लिम काल अथवा मध्य काल की संज्ञा दी गई। मुस्लिम शासक भारत में अपना धर्म व अपनी संस्कृति को लेकर आये थे। भारत में शासन के साथ-साथ इन्होंने अपनी संस्कृति व धर्म का प्रसार भी किया। मुस्लिम धर्म व संस्कृति का प्रसार करने के लिए आवश्यक था कि, भारतीय संस्कृति व धर्म पर प्रहार करना तथा भारतीय शिक्षा प्रणाली को हटाकर नवीन शिक्षा प्रणाली लागू करना /
मुस्लिम शिक्षा प्रणाली का अध्ययन
1. शिक्षा का अर्थ

2. शिक्षा का संरचना

3. शिक्षा का प्रशासन एवं वित्त

4. मुस्लिम शिक्षा के उद्देश्य

5. शिक्षण विधियों
6. अनुशासन

7. मुस्लिम काल में शिक्षक

8. मुस्लिम काल में शिक्षार्थी

9. शिक्षक शिक्षार्थी सम्बन्ध

10. मुस्लिम कालीन शिक्षण संस्थाएँ

11. परीक्षा प्रणाली

12. मुस्लिम काल में सैन्य शिक्षा

14. स्वी शिक्षा

15. मुस्लिम कालीन शिक्षा के गुण

16. मुस्लिम कालीन शिक्षा के दोष

17. वैदिक बौद्ध व मुस्लिम शिक्षा प्रणाली की तुलना।
मुस्लिम काल में शिक्षा का अर्थ
इस काल में शिक्षा को ज्ञान का पर्याय माना जाता था। शिक्षा से तात्पर्य केवल मदरसों व मकतयों में दिए जाने वाले ज्ञान से ही लिया जाता था। जो कि शिक्षा का संकुचित अर्थ था।

शिक्षा का स्वरूप
सम्पूर्ण मुस्लिम शिक्षा दो भागों में विभक्त थी।
1. प्राथमिक शिक्षा
2. उच्च शिक्षा
मुस्लिम शिक्षा के उद्देश्य
- इस्लाम संस्कृति का प्रचार-प्रसार करना
- ज्ञान का विकास करना
- नैतिक व चारित्रिक विकास करना
- शासन के प्रति वफादारी
- कला कौशल व व्यवसाय की शिक्षा
- सांसारिक सुखों की प्राप्ति करना
  मुस्लिम कालीन शिक्षण विधियाँ
    - मौखिक विधि
    - कक्षा अनुवीक्षक प्रणाली
    - भाषण एवं व्याख्यान विधि
    - व्यावहारिक व प्रयोगात्मक शिक्षा
    - विश्लेषणात्मक एवं आगमन विधि
    - तर्क विधि

मुस्लिम कालीन शिक्षण संस्थाएँ
- मकतब
- मदरसा
- अरबी स्कूल
- फारसी स्कूल
- कुरान स्कूल
- दरगाहे

मुस्लिम शिक्षा प्रणाली के गुण
1. मुस्लिम कालीन शिक्षा का उद्देश्य इस्लाम की शिक्षा देना ज्ञान के विकास द्वारा मुक्ति प्राप्त करना था।

2. इस काल में शिक्षा को राज्य का संरक्षण प्राप्त था। राज्य शिक्षा संस्थाओं की स्थापना तथा उनके लिए आर्थिक सहयोग भी देते थे।

3. मुस्लिम शिक्षा प्रणाली में निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाती थी। योग्य व मेधावी छात्रों को छात्रवृत्तियाँ भी दी जाती थी।

4. छात्रों का शिक्षा के द्वारा नैतिक व चरित्र निर्माण तथा सामाजिकता का विकास किया जाता था।

5. मुहम्मद साहब ज्ञान को अमृत समझते थे। इस कारण मुस्लिम शिक्षा प्रणाली में इस्लाम धर्म के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ ज्ञान का विकास किया जाता था।

6. इस काल में साहित्य रचना को प्रोत्साहन दिया गया।

7. इस काल में भौतिक व धार्मिक शिक्षा में परस्पर सम्बन्ध स्थापित कर सांसारिक पक्ष को महत्व दिया गया।

8. मुस्लिम काल में इतिहास लेखन के कार्य को बढ़ावा दिया गया।

9. तत्कालीन परिस्थिति के अनुसार पाठ्यक्रम में विषय शामिल किए गए।

10. इस काल में सफलता का मापदण्ड़ परीक्षा न होकर वास्तविक योग्यता थी। योग्य छात्रों को ही उपाधि प्रदान की जाती थी।

11. एक अध्यापकीय स्कूलों में मॉनीटर प्रणाली का प्रचलन था।

12. तकनीकी व व्यावसायिक शिक्षा का विकास किया गया।

13. इस काल में उच्च शिक्षा के लिए पृथक विद्यालय थे।

14. इस काल में गुरू व शिष्य में निकटता तथा व्यक्तिगत सम्पर्क था। और उनमें परस्पर प्रेम, त्याग तथा सम्मान की भावना का विकास, किया जाता था।

मुस्लिम शिक्षा के दोष

1. इस काल में धार्मिक कट्टरता का बोलबाला रहा। जिस कारण शिक्षा का दृष्टिकोण संकुचित तथा संकीर्ण बन गया। अन्य धर्मों के प्रति कठोरता का व्यवहार किया गया।
2. तत्कालीन बौद्ध शिक्षा प्रणाली व भारतीय शिक्षा प्रणाली पर प्रहार किया।
3. शिक्षा का उद्देश्य इस्लाम संस्कृति व धर्म का प्रचार करना था।
4. इस काल में भारतीय भाषाओं, साहित्य, धर्म व दर्शन की अवहेलना की गई। केवल इस्लाम धर्म पर ध्यान दिया गया।
5. इस काल में शिक्षा का माध्यम विदेशी भाषाएँ बन गई।

6. रहने की विद्या पर अधिक बल दिया गया।

7. इस काल में दमनात्मक अनुशासन था। इस प्रकार के अनुशासन से छात्र की मूल प्रवृतियोंक विकास नहीं हो पाया।

8. शिक्षालय मस्जिदों के पास होने के कारण ये मुल्ला की इच्छा पर ही निर्भर रहे। इनमें स्थिरता का अभाव था।

9. यह शिक्षा प्रणाली व्यक्तियों को एक पृथक जीवन दर्शन प्रदान करने में असफल रही।

10. पर्दा प्रथा के कारण स्त्री शिक्षा का विकास नहीं हो पाया।

11. उच्च आदशों के अभाव में विलासिता व सांसारिक सुख भोग में वृद्धि हुई।

12. मुस्लिम शासकों ने शिक्षा प्रणाली का कोई सुनिश्चित प्रारूप विकसित नहीं किया। यह शिवा अनुदान इच्छा पर निर्भर थी।

13. बिना समझे केवल रटने पर अधिक बल देकर कृतिमता को बढ़ावा दिया गया। मौलिक चिन्तन तथा स्वतंत्र चिन्तन का अभाव था।

14. मॉनीटर प्रणाली होने से शिक्षण कार्य सुचारू नहीं चल पाया तथा योग्य शिक्षकों की कमी रही।

15. शिक्षा का कोई अपना अस्तित्व नहीं रह गया यह मुल्ला या बादशाहों की इच्छा पर ही निर्भर थी।

अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली

भारत प्रारम्भ से ही विदेशियों आकर्षण का केन्द्र रहा है। 1498 में पुर्तगाली नाविक वास्कोडिगाषा ने समुद्री मार्ग की खोज कर कालीकट पहुँचने में सफल हुआ। इनके बाद डच, फ्रांसीसी तथा डेन व्यापारियों का प्रवेश हुआ सन् 1600 ई0 में ईस्ट इण्डिया कम्पनी भारत आयी। 1200 ई० से लेकर 1700 ई0 तक भारत में मुस्लिम शासकों का शासन रहा। जहाँ तक आधुनिक शिक्षा प्रणाली की शुरूआत की बात है। इसकी शुरूआत 1510 ई0 में पुर्तगाली ईसाई मिशनरियों ने कर दी थी। इसके बाद 1613 में अंग्रेजी ईसाई मिशनरियों ने इसे मजबूत किया।

- पुर्तगाली ईसाई मिशनरियों के शैक्षिक कार्य
- ईसाई मिशनरियों के शैक्षिक कार्य
- अंग्रेज ईसाई मिशनरियों के शैक्षिक कार्य

  1813 तथा **1833** का आज्ञापत्र

  1. किसी भी यूरोपीय देश की मिशनरियों को भारत में प्रवेश करने और वहाँ ईसाई धर्म तथा शिया के प्रसार की छूट होगी।

  2. ईस्ट इण्डिया कम्पनी का उत्तरदायित्व होगा कि वह अपने शासित प्रदेशों में शिक्षा की व्यवस्था करे।

  3. प्रतिवर्ष कम से कम एक लाख रूपयों की धनराशि का प्रयोग साहित्य के रख-रखाव एवं विकास तथा भारतीय विद्वानों के प्रोत्साहन और भारत में ब्रिटिश शासित रहने वालों का विज्ञान का ज्ञान कराने में किया जाए।

  चार्टर एक्ट **1813** धारा **43**

  1813 के आज्ञा पत्र में पारा 43 जोड़ी गई लेकिन इस धारा के विषय में स्पष्ट व्याख्या नहीं की कि जो एक लाख रूपये खर्च करने हैं उसे कहाँ खर्च किया जाय। इसमें साहित्य एवं विद्वान शब्द की व्याख्या नहीं की गई कि यह अंग्रेजी साहित्य है या भारतीय साहित्य तथा भारतीय विद्वान हैं या फिर पाश्चात्य। कुछ विद्वान इसे भारतीय साहित्य और भारतीय विद्वान समझते थे तथा कुछ विद्वान अंग्रजी साहित्य व पाश्चात्य विद्वान समझते थे। अब समस्या यह खड़ी हो गई कि 1 लाख रूपया कहाँ खर्च किया जाए? इस सन्दर्भ में दो विचारधाराऐं रही एक प्राच्यवादी तथा दूसरा पाश्चात्यवादी तथा दोनों विचार धाराओं में विवाद हो गया।

  प्राच्य व पाश्चात्य विवाद

  यदि देखा जाए तो इस विवाद के बीज 1793 के चार्टर एक्ट के समय ही पनप चुके थे। लेकिन 1813 के आज्ञा पत्र के बाद इसका रूप और अधिक बढ़ गया। क्योंकि 1813 के आज्ञा पत्र में धारा 43 जोड़ दी गई तथा उसकी स्पष्ट व्याख्या नहीं की गई। जिस कारण प्राच्य व पाश्चात्य दो गुट बन गये। प्राच्यवादी निर्धारित 1 लाख रूपये की धनराशि को भारतीय साहित्य भारतीय भाषा व भारतीय विद्वानों पर खर्च करना चाहते थे। लेकिन पाश्चात्यवादी विचारधारा के लोग इस धन को पाश्चात्य साहित्य, भाषा व पाश्चात्य विद्वानों पर खर्च करना चाहते थे। यह विवाद का मुख्य कारण था। इस सम्बन्ध में दोनों के अपने-अपने तर्क थे। प्राच्यवादी विचारधारा के लोग भारतीय संस्कृति व साहित्य की रक्षा करना चाहते थे जो कि ब्रिटेन के हित में नहीं था। पाश्चात्यवादी विचारधारा के लोगों का तर्क था कि भारत में पश्चिमी संस्कृति का विकास किया जा सके तथा कम्पनी व शासन में कार्य करने के लिए भारतीय अंग्रेज तैयार किये जा सकें। जिससे भारत में ब्रिटिश शासन की नींव मजबूत होगी। जो कि भारतीयों के हित में नहीं था।

  नये आर्थिक सुधार का शिक्षा पर सकारात्मक प्रभावों

  किसी भी देश की तरक्की का मूल्यांकन उसकी शिक्षा प्रणाली से होता है। शिक्षा समाज का केन्द्र बिन्दु है जिसके माध्यम से समाज का विकास होता है। शिक्षा की तरक्की का एक महत्वपूर्ण पहलू अधिक सुधार है। आर्थिक सुधार का जुहाव अर्थ भारत सरकार ने जिसके बजट 2014-15 में निम्नलिखित प्रावधान किरण में

सभी बालिका और पेयजल की की सुविधा मुहैया कराईगी इसमें सर्वशिक्षा अभियाना 35 करोड़ तथा राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के लिये 4966 करोड़ की राशि प्रदान की

Laड़ली योजना **(**दिल्ली**)** - दिल्ली सरकार की सामाजिक योजना लाडली की शुरुआत वर्ष 2008 में की गई थी। विगत दो वर्षों से अधिक समय में इस योजना की प्रासंगिकता साबित हुई है। 6917 लड़कियों से संबंधित अंतिम दावे के भुगतान के तौर पर 3.7 करोड रुपए की राशि जारी की गई थी। अंतिम भुगतान का दावा वे पंजीकृत लडकियां कर सकती हैं। जिन्होंने 18 वर्ष की आयु पूरी कर ली है और दसवीं कक्षा पास कर ली है या 12वीं कक्षा में पढ रही है। यह योजना मुख्यमंत्री शीला दीक्षित की पहल पर शुरू की गई और इसे केंद्र सरकार और अन्य राज्यों सरकारों ने भी अपनाया। इस योजना को कन्याओं की शिक्षा से जोडा गया है और इससे राजधानी में विपरीत लिंग अनुशत सही करने में भी मद्द मिली है। महिला एवं बाल विकास विभाग ने पात्र लडकियों के अभिभावकों से भुगतान के लिए अंतिम दावा पेश करने का अनुग्रह किया है। इस दावे के साथ एसबीआइएल द्वारा जारी मूल प्राप्ति रसीद, भारतीय स्टेट बैंक द्वारा जारी मूल पास बुक व दसवी कक्षा पास करने या 12वीं कक्षा में पढ़ने के मूल प्रमाण पत्र भी दिए जाने हैं। दसवीं कक्षा के बाद आगे शिक्षा जारी रखने की इच्छुक लडकियां 12वीं में दाखिला ले सकती हैं। सरकार उनके खाते में पांच हजार रुपए की अतिरिक्त राशि जमा कराएगी

midday मिल योजना

भारत सरकार द्वारा विद्यालयों में बच्चों के नामांकन बढ़ाने, उन्हें बनाए रखने और उपस्थिति के साथ-साथ बच्चों के बीच पोषण स्तर सुधारने के दृष्टिकोण के साथप्राथमिक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पोषण सहयोग कार्यक्रम 15 अगस्त, 1995 से शुरू किया गया। यह योजना प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लिए बलाए गए विभिन्न कार्यक्रमों में से एक है। केन्द्र द्वारा प्रायोजित इस योजना को पहले देश के 2408 ब्लॉकों में शुरू किया गया। वर्ष 1997-98 के अन्त तक एनपी-एन एस पी ई को देश के सभी ब्लॉकों में लागू कर दिया गया। 2002 में इसे बढ़ाकर न केवल सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और स्थानीय निकायों के स्कूलों के कथा एक से पांच तक के बच्चों तक लिया गया। इस योजना के अन्तर्गत शामिल हैं प्रत्येक स्कूल दिवस प्रति चालक 100 ग्राम खाद्यान्न तथा खाद्यान्न सामग्री को लाने-ले जाने के लिए प्रति क्विंटल 50 रू० की अनुदान सहायता।

उद्देश्य

(1) सरकारी, स्थानीय निकाय तथा सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों, और ई जी एस तथा एआईई केन्द्रों में कक्षा एक से पांचवीं तक पढ़ने वाले बच्चों की पोषण स्थिति में सुधार।

(ii) सुविधाहीन वर्ग के गरीब बच्चों को कक्षाओं में नियमित उपस्थित रहने तथा कक्षाओं की गतिविधियों पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए प्रोत्साहित करना।

(iii) गर्मियों की छुट्टियों के दौरान सूखा प्रभावित क्षेत्रों में प्राथमिक स्तर के बच्चों की पोषण सहायता उपलब्ध कराना।

(iv) विद्यालयों में बच्चों के पंजीकरण को बढ़ाना।

(४) बच्चों का मानसिक व शारीरिक विकास करके उनकी एकाग्रता को बढ़ाना।

लाड़ली लक्ष्मी योजना

रांची रू गरीबी रेखा से नीचे गुजर बसर करने वाले

परिवारों के लिए मुख्यमंत्री लक्ष्मी लाडली योजना योजना किसी वरदान से कम नहीं। बच्ची के जन्म से लेकर उसकी शिक्षा, यहां तक कि उसकी शादी तक के लिए धन राशि संरक्षित करने वाली इस योजना की विधिवत शुरुआत मंगलवार को हो गई। 15 नवंबर 2010 के बाद जन्मी बच्चियों को इस योजना का लाभ मिलेगा।

सुकन्या समृद्धि खाता

4 दिसंबर, 2014 में सरकार ने छोटी बचत को प्रोत्साहन देने के लिए बालिकाओं की विशेष जमा योजना 'सुकन्या समृद्धि खाता' का शुभारंभ किया।

-3 दिसंबर, 2014 को सुकन्या समृद्धि खाता नियम-2014 को भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया गया।

सुकन्या समृद्धि खाता बालिका के माता-पिता या संरक्षक द्वारा बालिका के नाम से उसके जन्म लेने से दस वर्ष तक की आयु प्राप्त करने तक खोला जा सकेगा।

यदि कोई बालिका जिसने इस नियम के प्रारंभ होने के एक वर्ष पहले दस वर्ष की आयु प्राप्त कर ली थी वह भी खाता खोलने के लिए पात्र होगी।
तकनीकी सशक्तीकरण के लिए शिक्षा
तर्कनीकी सशक्तीकरण किसी भी देश के विकसित होने का अर्थ उस देश के नागरिकों के

सर्वांगीण विकास से होता है आज का युग संचार प्रौद्योगिकी विज्ञान तकनीकी का युग है तकनीकी के बिना किसी भी देश और उसके समाज के विकसित होने की कल्पना भी नहीं की जा सकती है 21वीं शताब्दी में नई तकनीकी का विस्फोट हुआ है जिसने मानव जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित किया है अभिनव परिवर्तन पद्धति (नवाचार) में देश में सभी स्तरों पर परिवर्तन किये जाएँ ताकि ज्ञानवान समाज की स्थापना हो सके, तकनीकी नवाचार के उचित उपयोग से शिक्षण अधिगम तथा प्रशिक्षण में सफलता एवं कुशलता संभव है।
1986 राष्ट्रीय शिक्षा नीति
शिक्षा तकनीकी का अर्थ एवं परिभाषा
शिक्षा तकनीकी दो शब्दों से मिलकर बना है शिक्षा तकनीकी। शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है आप साक्षात्कार है व्यक्ति को निस्वार्थी बनाती है तकनीकी का संबन्ध कौशल तथा दक्षता से है वैज्ञानिक ज्ञान का दैनिक जीवन में उपयोग करना
परिभाषा
एस. एस. कुलकर्णी तकनीकी तथा विज्ञान के अविस्कारों तथा नियमों के शिक्षा की प्रक्रिया में प्रयोग को शिक्षा तकनीकी कहा जाता है।
तकनीकी का प्रभाव

- सांस्कृतिक पक्ष पर प्रभाव
- भौतिक पक्ष पर प्रभाव
- मनोवैज्ञानिक पक्ष

सशक्तीकरण दो कारेको पर निर्भर करती है **-**
1. ताकत (शक्ति) परिवर्तन लाती है ताकत (शक्ति) के बढ़ने से परिवर्तन पूर्ण रूप से सम्भव होते है।
2. ताकत (शक्ति) विस्तार करती है यह बताती है कि परिवर्तन कितना हुआ उसका प्रसार करती है।
सशक्तीकरण के कार्य
1. विश्वास निर्माण के लिए अवसर प्रदान करना।

2. नियमो को कम करना (आवश्यकता एवं कार्य के अनुसार नियम रखना)।

3. अर्थपूर्ण लक्ष्यों का निर्माण तथा ऐसे लोगो को शामिल करना जो लक्ष्य प्राप्ती करने में सहभागिता दें।

4. परिणामों पर ध्यान देना।

5. ऐसे कार्यों के लिए सीमाओं का निर्धारण करना जिनमें कुछ हानि होने की सम्भावना है।

6. सहभागिता की प्रशंसा करना।

7. लक्ष्य प्राप्ती के लिए अवसर को, पुरस्कार के रूप में उपयोग करना।

8. लोगो की सोच जानना तथा आपसी मतभेदो को जानना।
सशक्तीकरण की प्रक्रिया में निम्न बाते सम्मिलित है

1. सशक्तीकरण व्यक्तिगत एवं सामुहिक परिस्थितियों से सम्बन्धित निर्णय लेने की योग्यता है।
2. निर्णय लेने के लिए सूचना एवं संसाधन तक पहुंचने की योग्यता है।
3. विभिन्न विकल्पों में से किसी एक को चुनने की योग्यता ।
परिवर्तन लाने के विषय में सकारात्मक सोच ।
व्यक्तिगत सामुहिक परिस्थितियों को सुधारने के लिए कौशलों को सीखने की योग्यता।

6. लोगों के दृष्टिकोण को शिक्षा के माध्यम से प्रकाश में लाने की योग्यता।

1. तरक्की तथा परिवर्तन की प्रक्रिया में सम्मिलित होना।

5

. लोगों के दृष्टिकोण को शिक्षा के माध्यम से प्रकाश में लाने की योग्यता ।

३१. सही गलत के मध्य अन्तर स्पष्ट करने की योग्यता को बढ़ावा।

10. सामुहिक निर्णय लेने की प्रक्रिया में दृढ़निश्वयात्मकता का प्रयोग करने की योग्यता ।
सशक्तीकरण के प्रकार

- राजनीतिक सशक्ति करण
- सांस्कृतिक सशक्तीकरण
- राष्ट्रीय
- तकनीकी
- आर्थिक सशक्तिकरण
  सशक्तीकरण के लिए शिक्षा

सर्वविदित है कि शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है शिक्षा द्वारा मानव में सामाजिक गुणों का विकास किया जाता है उसे पूर्ण सामाजिक प्राणी बनाने में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। उसे पूर्ण सामाजिक प्राणी बनाने में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है।
शिक्षा के कारण आज विश्व के सभी देश अपने आपको समृद्धिशील विकसित करने के लिए नवीन योजनाओं का निर्माण कर रहे है। शिक्षा ने व्यक्ति को इस योग्य बनाया है वह अपने अच्छे बुरे का निर्णय स्वयं ले सके जीवन में सफलता का आधार वास्तव में शिक्षा में निहित है समय के साथ-साथ शिक्षा के उददेश्य भी बदलते रहे है, वैदिक बौद्ध मुस्लिम में शिक्षा का उददेश्य अमरत्व, निर्वाण जन्नत की प्राप्ती या मिशनरियों के काल में इसाई धर्म का प्रचार-प्रसार स्वतन्त्रता के बाद भारत में शिक्षा को सामाजिक करण का सशक्त साधन मानते हुए व्यैयक्तिक नागरिक गुणों को विकसित करने का प्रयास प्रयत्नरत है।

सार्वभौमिक शिक्षा में अध्यापक की भूमिका
सभी स्कूल विद्यार्थियों से कुछ अपेक्षाएं अवश्य रखते हैं। कुछ स्कूलों में तो अध्यापक और स्कूल सभी विद्यार्थियों से समान रूप से सभी विद्यार्थियों से उच्च अपेक्षाएँ बनाए रखते हैं या विद्यार्थियों के कुछ हिस्से से तो महान अपेक्षाएँ रखी जाती हैं और विद्यार्थियों के कुछ खण्ड़ों से निम्नतम अपेक्षाएं रखते हैं। इसी प्रकार शहर के बाहरी और भीतरी भागों के स्कूलों से भी भिन्न-भिन्न अपेक्षाएँ रखते हैं
शिक्षक अपेक्षाओं में अन्तर्निहित प्रक्रिया
1. शिक्षक किसी विद्यार्थी विशेष से किसी प्रकार के व्यवहार तथा उपलब्धि की आशा या अपेक्षा करता है।

2. इन अपेक्षाओं के फलस्वरूप शिक्षक अलग-अलग विद्यार्थियों से अलग-अलग तरह का व्यवहार करता है।

3. शिक्षक का उनके प्रति किया गया ऐसा व्यवहार प्रत्येक विद्यार्थी को यह सिखा देता है कि किस प्रकार के व्यवहार एवं उपलब्धि की आशा या अपेक्षा शिक्षक को उससे है यह बात विद्यार्थी विशेष के आत्म-संप्रत्यय (Self concept), उपलब्धि अभिप्रेरणा तथा महत्वाकांक्षा के स्तर पर असर डालने वाली सिद्ध हो सकती है।

4. अगर शिक्षक अपने इस व्यवहार की पुनरावृत्ति करता रहता है और अगर विद्यार्थी विशेष इस प्रकार के शिक्षक व्यवहार का सक्रिय विरोध नहीं करता। जिन विद्यार्थियों से अधिक की अपेक्षाये हैं। वे अधिक की उपलब्धि करने लगेंगे और इसके ठीक विपरीत कम की अपेक्षायें हैं, उनका उपलब्धि स्तर गिरता जायेगा।

5 जैसे-जैसे समय गुजरता जायेगा, विद्यार्थी विशेष की उपलब्धि एवं व्यवहार उसी उपलब्धि स्तर एवं व्यवहार के सम कक्ष होते चले जायेंगे जिसकी अपेक्षा अध्यापक विशेष को उससे थी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति **1986** में वर्ग, जाति, जनजाति, धर्म तथा लिंग के संदर्भ में क्या प्रावधान किए गए हैं**?**

- नारी-शिक्षा
- अनुसूचित जातियों की शिक्षा
- अनुसूचित जनजातियों की शिक्षा
- विक्रसागों के लिए शिक्षा
- अल्पसंख्यकों के लिए शिक्षा
- शिक्षण दृष्टि से पिछड़े हुए अन्य वर्ग और क्षेत्र की शिक्षा -

अवसरों की समानता के सम्बन्ध में शिक्षा को बताइए।
भारत में शिक्षा के अवसरों की विषमताएँ

- ग्रामीण और नगरीय विभिन्नता
- लिंग और जाति पर आधारित विषमत
- भारतीय शिक्षा नीति 1968
- डॉ. त्यागी एवं पाठक का मत

  भारत में शैक्षिक अवसरों की समानता की उपलब्धि में बाधाएँ
  - लैंगिक भेदभाव
  - घर का दूषित वातावरण
  - शारीरिक विकलांगता
  - आर्थिक असन्तुलन
  - प्रादेशिक असन्तुलन